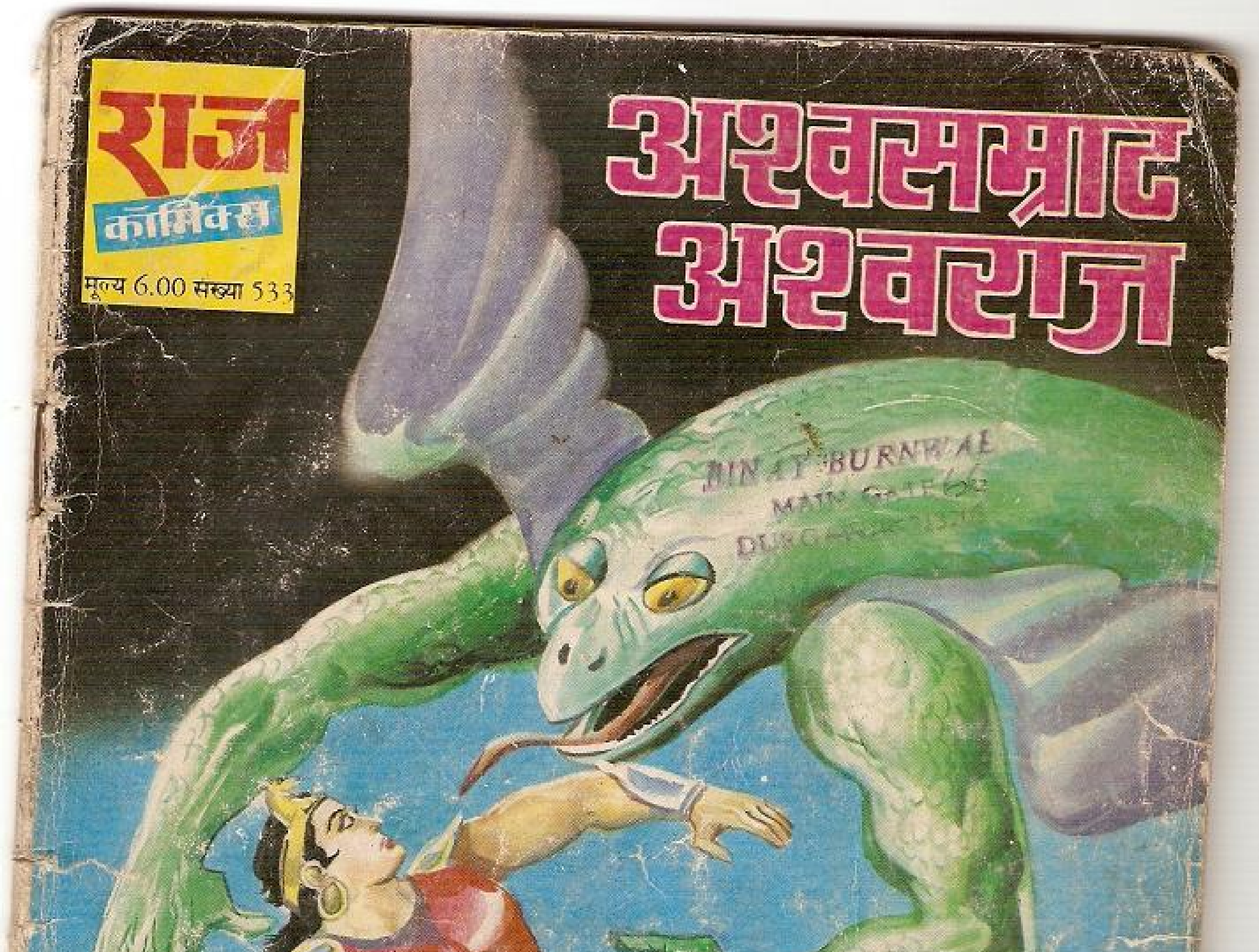
राज
कॉमिक्स
मूल्य 6.00 संख्या 533
अश्वसम्राट
अश्वराज
BINAY BURNWAL
r.ko scan

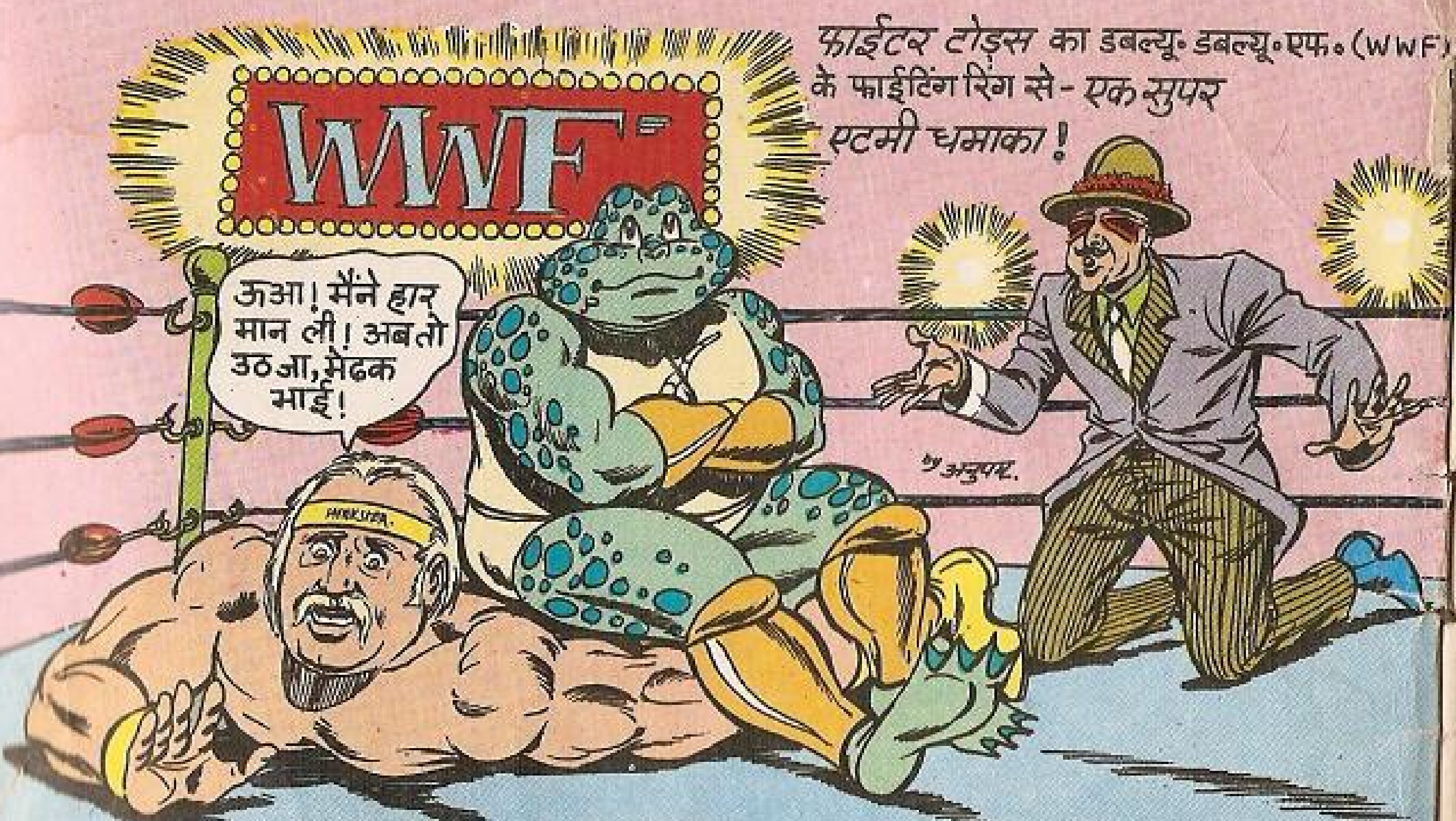

चैम्पियन

मूल्य 20.00

इसी सैट के कॉमिक्स

- खतरों की धरती (भोकाल का विशेषांक)
  इस विशेषांक के साथ भोकाल का सुपर स्टीकर मुफ्त।
- डोगा जिन्दाबाद (डोगा)
  इस कॉमिक्स के साथ आकर्षक स्टीकर मुफ्त।
- अश्वसम्राट अश्वराज (अश्वराज)
- विजेता (योद्धा)
- लट्टू (परमाणु)
- खून की होली (थ्रिल हॉरर सस्पैंस)

आगामी सैट के कॉमिक्स

- नागराज और कांजा (नागराज का विशेषांक)
  इस विशेषांक के साथ नागराज का पोस्टर मुफ्त।
- बिच्छू (डोगा)
  इस कॉमिक्स के साथ स्टीकर मुफ्त।
- वज्रा (भोकाल)
- ग्रीनगोल्ड (भेड़िया)
- टट्टू (थ्रिल हॉरर सस्पैंस)
- मैं हूं खलनायक (प्रचंडा)

प्रकाशक : राजा पॉकिट बुक्स 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110009
दिल्ली में वितरक : नागराज नॉवल्टीज 313, दरीबाकलां, दिल्ली-6

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

अश्वसम्राट अश्वराज

— लेखक —
तरुणकुमार वाही
— संपादन —
मनीष गुप्ता
— कलानिर्देशन —
प्रताप मुळीक
— चित्रांकन —
गोपाळ नांदूरकर

विशेष नोट :- अश्वराज सीरीज के इस महाजंगी कॉमिक्स का असली आनन्द लेने के लिए कृपया पूर्व प्रकाशित कॉमिक्स- अश्वराज और अश्वनाद, अश्वराज और कल्पतरु, अश्वराज और अघोर, अश्वराज और मैं, अश्वराज और तुम, अश्वराज और अश्वभीम पढ़ना न भूलें। जो कि इस अंतिम भाग की शेष कड़ियाँ हैं।

अश्वराज! अभी मेरा रहस्य जान लेने का समय नहीं आया! मैं तुम तक केवल ये शक्ति पहुंचाने आया हूं, जिसकी कि तुम्हें शीघ्र ही आवश्यकता पड़ने वाली है।
इसे ग्रहण करो अश्वराज!
और अश्वमेध के उच्चारण के पश्चात ही इसका उपयोग करना।
शक्ति!
फिर इससे पहले कि अश्वराज अश्वमेध से कोई अगला प्रश्न कर पाता, तीर की सी तीव्रता के साथ अश्वमेध उसकी आंखों के आगे से दूर होता चला गया।
ओह! एक बार फिर मैं अश्वमेध का रहस्य जान लेने से वंचित रह गया।
और कैसी है ये शक्ति? कब पड़ेगी आवश्यकता मुझे इसकी? और मुझे इसकी आवश्यकता पड़ने वाली है, यह बात अश्वमेध कैसे जानता है?
उधर भोर होने में अभी कुछ विलम्ब था-
किंतु अश्वखली के खेमे में हलचल मची थी-
नहीं! यह नहीं हो सकता। ओह!

पिता के सामने ही पिघल रहा था पुत्र का शव!
अश्खोर को अब दुनिया की कोई ताकत नहीं बचा सकती।
मेरी इस चेष्टा को असफल कर दिया अश्वराज ने।
अश्खोर के शव का आखिरी हिस्सा भी पिघलकर बह गया-
अश्वराज! अब तू मेरे कहर से नहीं बचा पायेगा सम्पूर्ण सूर्यवंशी नगर को।
आज युद्ध में स्वयं मैं जाऊंगा अपनी शक्ति के साथ। हा हा हा।
अश्वखली की आंखों से नफरत व प्रतिशोध के अंगारों के झरने फूट निकले थे।
इधर नाल अपने एक हाथ से कुदुमछुम्बी के लहलहाते केश थाम कर आगे बढ़ा तो चीख पड़ी कुदुमछुम्बी-
आऽऽह कहर से भय खा नाल! कहर से भय खा! जब अश्वराज को तेरी इस दुष्टता का पता चलेगा तो वे तेरे टुकड़े-टुकड़े कर के चील-कौवों के आगे डाल देगा!
किंतु साथ ही तेरी अवस्था देख कर वो आत्महत्या भी कर लेगा।
कुदुम की विवशता पर भयानक अट्टहास लगा उठे नाल और सूर्रा।
हा हा हा! अभी तो तू भी नहीं जानती कि मैं तेरा क्या हाल करने वाला हूं। हा हा हा!
आह!
तभी वहां गूंज उठा एक कठोर स्वर!
रुक जाओ। बन्द करो ये क्रूरता।

उस तमाचे के साथ ही क्रोध से थर्रा उठा नाल का पूरा वजूद—
अपनी गन्दी जुबान से मुझे माताश्री मत कह दुष्ट!
तड़ाक
माताश्री
??
माताश्री! अगर आप भी मुझे उपदेश देने आई हैं तो कृपया कर मेरी राह छोड़ दें!...
...क्योंकि दण्ड तो मैं इसे देकर ही रहूंगा।
सैनिको! माताश्री को आदरपूर्वक इनके कक्ष में ले जाओ।
नहीं!
रुक जा नाल! रुक जा! तू उस मासूम स्त्री को नहीं, तू अपनी माताश्री के दूध को अपमानित कर रहा है। रुक जा।
नफरत व क्रोध की ज्वाला में आकंठ जलते हुए नाल व खूरी जब नगर से गुजरे, तो—
उफ! यह ठीक नहीं हो रहा। यह ठीक नहीं हो रहा!
हा हा हा
हा हा हा
आह
नाल व खूरी के प्रति सबके हृदय घृणा से भर उठे थे।

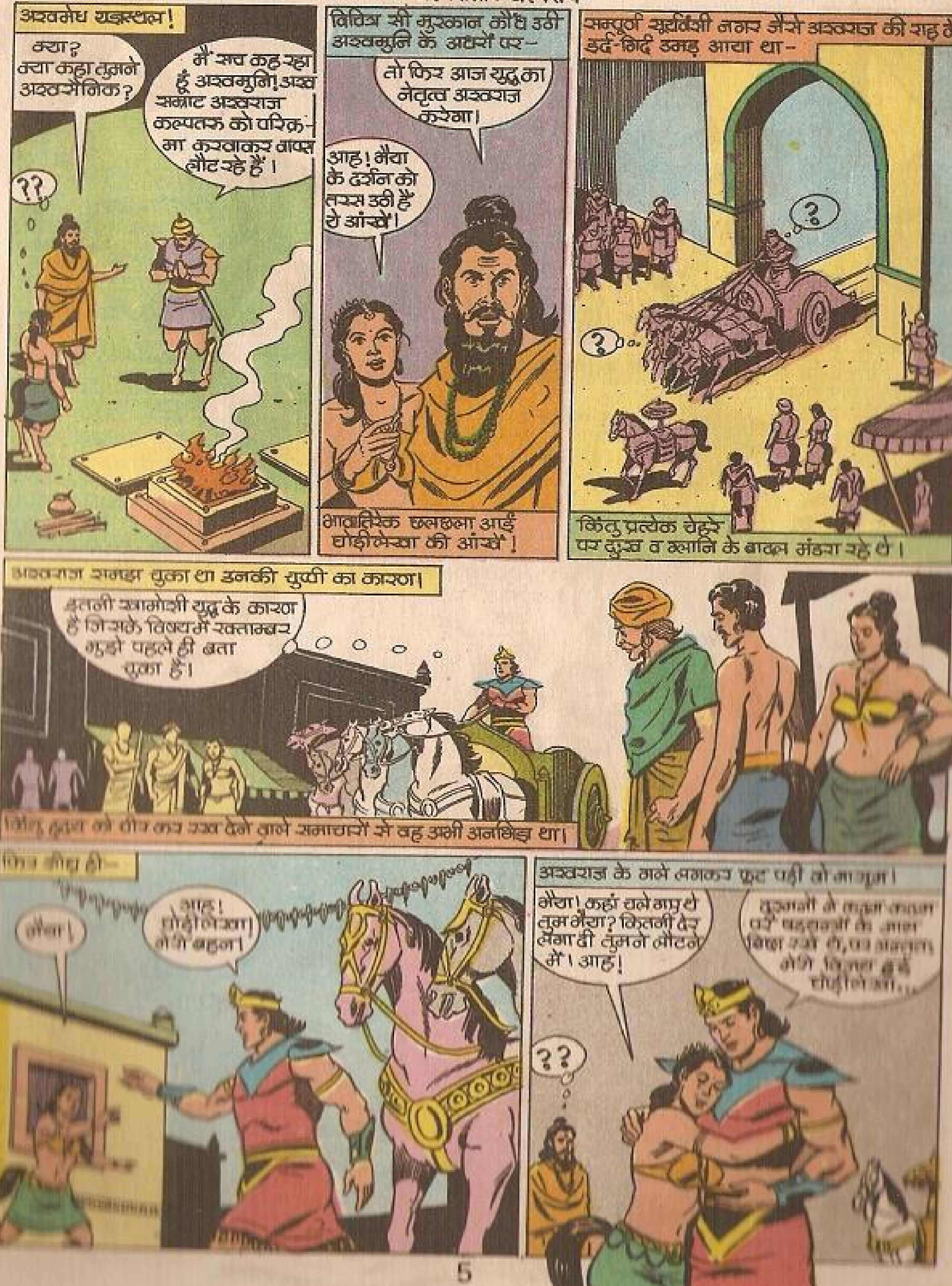
अश्वमेध यज्ञस्थल!
क्या? क्या कहा तुमने अश्वसैनिक?
मैं सच कह रहा हूं अश्वमुनि! अश्व सम्राट अश्वराज कल्पतरु को परिक्रमा करवाकर वापस लौट रहे हैं।
??
विचित्र सी मुस्कान कौंध उठी अश्वमुनि के अधरों पर—
तो फिर आज युद्ध का नेतृत्व अश्वराज करेगा।
आह! भैया के दर्शन को तरस उठी हैं ये आंखें!
भावातिरेक छलछला आईं घोड़ीमेख्या की आंखें!
सम्पूर्ण सूर्यवंशी नगर जैसे अश्वराज की राह के इर्द-गिर्द उमड़ आया था—
?
?
किंतु प्रत्येक चेहरे पर दुःख व ग्लानि के बादल मंडरा रहे थे।
अश्वराज समझ चुका था इनकी चुप्पी का कारण।
इतनी खामोशी युद्ध के कारण है जिसके विषय में रक्ताम्बर मुझे पहले ही बता चुका है।
किंतु हृदय को चीर कर रख देने वाले समाचारों से वह अभी अनभिज्ञ था।
फिर शीघ्र ही—
भैया!
आह! घोड़ीमेख्या! मेरी बहन!
अश्वराज के गले लगकर फूट पड़ी वो मासूम।
भैया! कहां चले गए थे तुम भैया? कितनी देर लगा दी तुमने लौटने में। आह!
??

... वो देखा! मैं कल्पतरू को ले आया हूं! आप भी देखिये अश्वमुनि! मैं ले आया हूं कल्पतरू को!
किंतु... किंतु घोड़ीलेखा! तुम्हारी भाभीश्री यहां दिखाई नहीं पड़ रही?
क्या जवाब देती घोड़ीलेखा! फफक पड़ी मासूम!
और तब अश्वमुनि के बताने पर —
उफ! यह... यह आप क्या कह रहे हैं अश्वमुनि? मेरी कुदुम...
मैंने प्रतिज्ञा की है भैया कि सूरी की मृत्यु से पूर्व मैं उसकी वो उंगलियां काट लूंगी, जिन्होंने मेरे भाभीश्री के केशों को स्पर्श किया।
रणचण्डी सी नजर आने लगी थी घोड़ीलेखा!
विक्षिप्त सा हुआ चीखता चला गया अश्वराज!
नहीं! नहीं! नहीं! उफ! क्या सूर्यवंशी नगर में एक ऐसा अश्व योद्धा न था जो उस भेड़िए से मेरी कुदुम की रक्षा कर पाता! धिक्कार है! धिक्कार है! सम्पूर्ण सूर्यवंशी पर...
अश्वराज! राजकुमारीजी ने हमें अपनी सौगन्ध दे दी थी! अन्यथा हम उनकी रक्षा में अपने खून का कतरा-कतरा बहा देते।

दुश्मनों के खून का कतरा-कतरा तो अब अश्वराज बहायेगा!
अधूरे होंगे वो किस्से! अधूरी होंगी वो कहानियां जो सूर्यवंशी के इतिहास ने लिखीं।
अब!
हां, अब पूरी करूंगा मैं उस कहानी को। और अब। अब उस कहानी का एक-एक शब्द खून से लिखा जायेगा।
हवाइयां उड़ रही थीं अभी-अभी वहां पहुंचे उस अश्वसैनिक के चेहरे पर —
अश्वराज! अश्वराज! गजब हो जाएगा। आसमान टूट पड़ेगा अश्वराज! धरती फट जायेगी।
साफ-साफ कहो। क्या कहना चाहते हो?
र... राजकुमारीजी को अपमानित होने से बचा लो अश्वराज! सूरी और भाग सरेआम उनके केश...
नहीं!
??
हिनऽऽऽ

सुर्ख होती चली गई कनपटियाँ — रक्त जैसे नाड़ियों
बाहर फूट पड़ने को तड़फड़ाने लगा—
अश्वराज प्रलय
बनकर टूट पड़ेगा
न दुराचारियों
पर!
मुझे भी अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करनी है भैया! सुर्री की उंगलियों का लहू मांग रही है ये कटार।
अश्वराज के पांचों अश्वमित्र क्रोध से थरथरा रहे थे।
जल्दी करो अश्वराज! जल्दी करो। जिस धरती पर स्त्री को अपमानित होता हुआ देखा जाए, वहां जीवन कलंक है।
और जीवन में शायद वह रथ इतना तीव्र कभी न दौड़ा था। आंसुओं से
भीगे चेहरे के साथ चीखती चली जा रही थी घोड़ीसेना।
और तेज दौड़ो रक्ताम्बर! और तेज दौड़ो कालाखोर! आज परीक्षा है तुम्हारी तीव्रता की भी।
हिनऽऽऽहीऽऽ
रक्ताम्बर कह रहा है बहन कि आज तो मौत भी इस तीव्रता को कम नहीं कर सकती।
धगड़ धगड़
धगड़ धगड़
उधर उस चौराहे पर लाकर पटक दी गई थी कुदुमछुम्बी-
आऽऽऽऽ
सुर्री के आव्हान पर वहां भीड़ एकत्रित हो चुकी
थी-
आहाहा...
वह जुल्म बर्दाश्त न हुआ उससे—
रोक दो इस अत्याचार को शैतानो! वरना देवता का कहर टूट पड़ेगा हम सब पर।

सुर्री की तलवार उसके जिस्म के आर-पार हो गई—
देवता के कहर से खौफ खा रहा है तू, सुर्री के कहर की परवाह नहीं की तूने।
आऽऽऽऽ
शैतान खौफनाक ढंग से ठहाका लगाकर हंसा—
चल नाल! गो कर, जो करने के लिए तू यहां आया है।
अवश्य सुर्री!
राजकुमारी कुदुमछुम्बी! तेरी इस सुन्दरता पर मुग्ध होता है न अश्वराज। यह देख, अब मैं तेरे केश काटकर तेरी ये सुन्दरता तेरे कदमों पर डाल दूंगा। हा हा हा।
नहीं...
प्रलय की सी तेजी के साथ बाधाएं पार करता दौड़ा आ रहा था रथ—
उफ, तुम सब इतना धीमा क्यों दौड़ रहे हो। अश्वव्रट! इन्हें कहो कि ये और तेज दौड़ें।
??
जिस्म में तूफान और मस्तिष्क में खलबली मची हुई थी अश्वराज के भी।
इधर सुर्री ने जकड़ लिए कुदुम के केश-
नहीं। छोड़ दो मुझे। आह!
नाल का हाथ कुदुम के लहलहाते केशों को काट डालने के लिए उसके केशों की ओर बढ़ा-
हा हा हा

हिनऽऽहीऽऽ
और तभी! तीव्र हिनहिनाहटों से गूंज उठा वातावरण। तिरस्कार व बेबसी के आंसुओं में लथपथ चेहरे पर जैसे विराज हुई चंडिका।
अश्वराज! मेरा अश्वराज आ गया। मेरा अश्वराज आ गया ज़ालिमो।
अश्वराज!
अश्वराज!
पंचाश्वों की हिनहिनाहटों के उन स्वरों को लाखों अश्वों की भीड़ में पहचान सकती थी वो।
अश्वमानवों की भीड़ में भगदड़ मचाता हुआ आया वो तूफान!
हहींऽऽऽऽ
आह!
हटो पीछे उफ।
अगले ही पल कौंध उठी बिजलियां-
धड़ाक
उफ!
ओह!

तड़प कर पुकार उठी कुदुम-
भाभीश्री!
कुदुम!
अश्वराज!
भावातिरेक में जा लिपटी घोड़ीलेखा कुदुमछुम्बी से-
भाभीश्री! उठिए भाभीश्री! भैया आ गए हैं इन पापियों से तुम्हारी रक्षा करने।
घ... घोड़ीलेखा! न... मेरी ननद!
गरज पड़ा अश्वराज-
कुदुम! तुम्हारे चेहरे पर दुःख व अपमान की जितनी रेखाएं मुझे दिखाई पड़ रही हैं, उससे अधिक नाल व खुर्रा के पूरे बदन पर मैं रक्त की खींच दूंगा।
दो लगामें टूट कर अश्वराज के हाथों में झूल गईं।
शस्त्र दिखाई पड़ने लगे खुर्रा व नाल के हाथों में।
अश्वराज! अच्छा हुआ जो तू भी यहां आ गया! तेरे अंत के साथ ही युद्ध भी समाप्त होने का समय आ गया है।
और तेरे अंत के बाद मैं इस घमण्डी स्त्री के केश काटूंगा।
खुर्रा और नाल के शस्त्रों से निर्माण होने लगा उस शक्ति का-
खुर्रा के "खु" और नाल के "ना" से बनी शक्ति 'खुना' अब तेरी मृत्यु साबित होगी अश्वराज!

अश्वराज 'खूना' की ओर तीव्रता के साथ खिंचने लगा—
अश्वराज! खूना के भीतर जाने का अर्थ तुम्हारी मृत्यु होगा।
अश्वराज!
भैया!
अश्वराज ने हाथ में थमी लगामों को रथ की ओर उछाल दिया, जिन्हें फुर्ती के साथ नीलकंठ और श्रव्यशक्ति ने मुंह में दबोच लिया—
शाबाश नीलकंठ! शाबाश श्रव्यशक्ति! रथ को पीछे खींचो!
रथ के पीछे हटते ही तिलिस्मी नासिका की पहुंच से बाहर आ गया अश्वराज—
और अगले ही पल महाविलक्षण, महाअश्व मानव अश्वसम्राट अश्वराज परिवर्तित हो गया अनोखे इच्छाधारी रूप में—
इस नासिका का अंत मैं अवश्य करूंगा।
और उस नासिका पर भरपूर शक्तिशाली वार किया उसने—
लेकिन अगले ही पल उस नासिका को चीरकर बाहर आ गए वो खूनी जबड़े अश्वराज पर झपट पड़े—
उफ

आह
हाहाहा! अश्वराज! ये खूनी जबड़े तेरी बोटी-बोटी चबा जायेंगे।
शीघ्र ही अश्वराज वापस अपने पूर्व रूप में लौट आया—
इन जबड़ों के दांत तोड़ने के लिए यही रूप उत्तम रहेगा।
और तोड़ने लगा वो इन जबड़ों के दांत।
कड़ाक
तड़ाक
कड़
इधर रथ से जुड़े विलक्षण पंचाश्व की टक्कर से खूर्ग व नाल दोनों उछल पड़े—
धाड़
अपने तिलिस्मी शस्त्रों से तारतम्य भंग होते ही गायब हो गई वो नासिका और जबड़े भी।

इसी पल लहराया वो फंदा, और—
उफ! नहीं!
ओह! यह क्या?
दोनों के जिस्मों को लगा एक तूफानी झटका—
उफ! आह!
खुर्री ऽऽ
चीखें गूंज उठीं दोनों की—
रक्ताम्बर! कालाखोर! श्रेष्ठशक्ति नीलकंठ! अश्ववट! पूरे नगर का चक्कर लगा कर यहीं पर वापस लौटो ताकि इन दोनों अत्याचारियों का हश्र सारा जमाना देख ले।
नहीं!
चीखते रहे नाल व खुर्री! किंतु अश्वराज जैसे बहरा हो गया था।
हिम्मत हो तो आमने-सामने मुकाबला कर अश्वराज! आह!
नहीं! रथ रोक दे अश्वराज!
??
उचित दण्ड दे रहा है अश्वराज इन शैतानों को। इन्हें जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं।

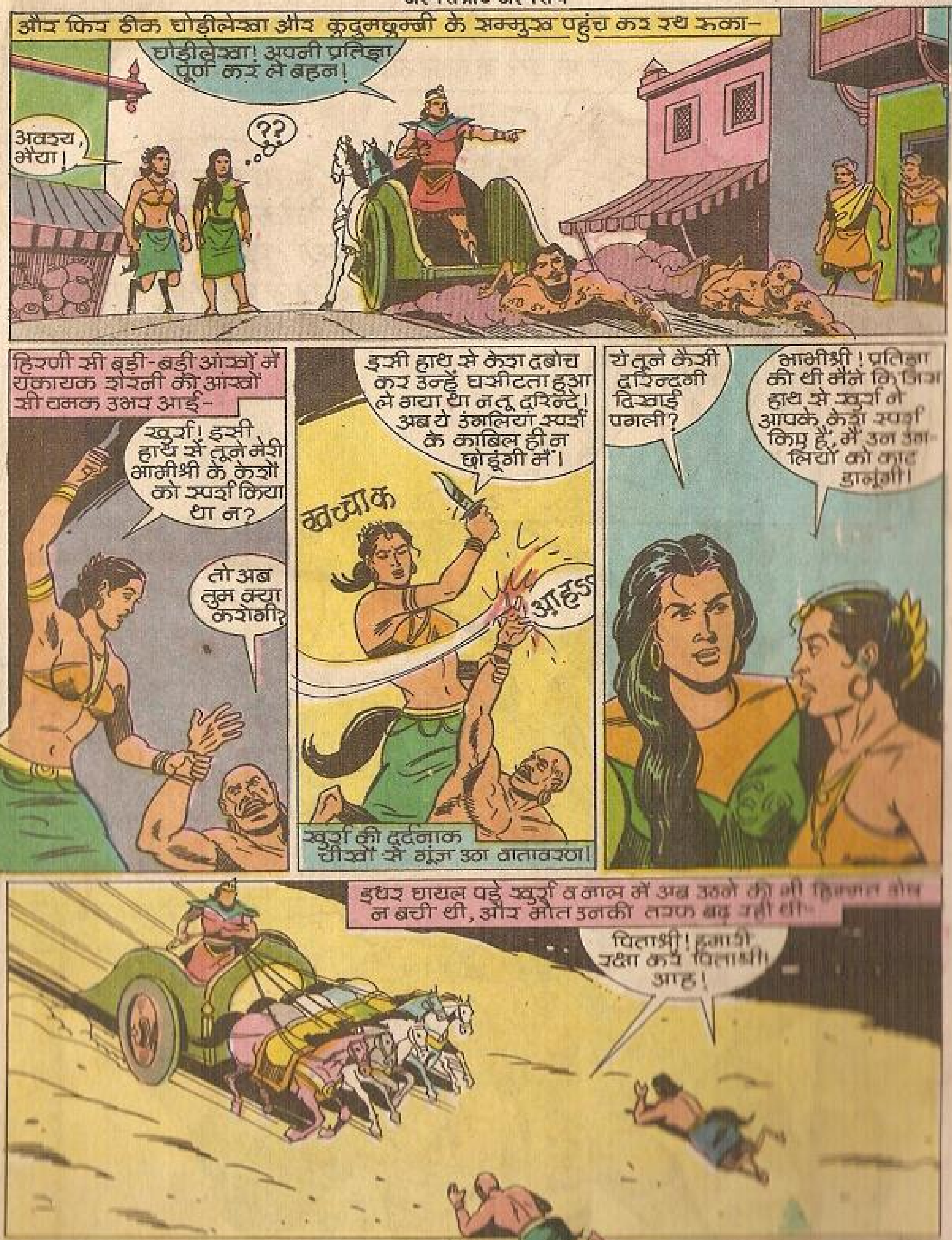
और फिर ठीक घोड़ीलेखा और कुदुमकुम्बी के सम्मुख पहुंच कर रथ रुका—
घोड़ीलेखा! अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण कर ले बहन!
अवश्य, भैया!
??
हिरणी सी बड़ी-बड़ी आंखों में एकायक शेरनी की आंखों सी चमक उभर आई—
खुर्री! इसी हाथ से तूने मेरी भाभीश्री के केशों को स्पर्श किया था न?
तो अब तुम क्या करोगी?
इसी हाथ से केश दबोच कर उन्हें घसीटता हुआ ले गया था न तू दरिन्दे! अब ये उंगलियां स्पर्श के काबिल ही न छोडूंगी मैं।
खच्चाक
आहऽऽ
खुर्री की दर्दनाक चीखों से गूंज उठा वातावरण।
ये तूने कैसी दरिन्दगी दिखाई पगली?
भाभीश्री! प्रतिज्ञा की थी मैंने कि जिस हाथ से खुर्री ने आपके केश स्पर्श किए हैं, मैं उन उंगलियों को काट डालूंगी।
पिताश्री! हमारी रक्षा करें पिताश्री! आह!

खुर्रा और नाल के कंठ से निकलने वाली वे चीखें उनकी अंतिम चीखें थीं—
पिताश्री ऽऽ—
आहऽऽ
और तब—
कुदुम! मुझे क्षमा करना कुदुम! अग्नि के समक्ष तुम्हारी रक्षा का वचन देकर भी मुझे तुम तक पहुंचने में विलम्ब हो गया।
अश्वराज!
ऐसा न कहो अश्वराज! तुम सूर्यवंशी सम्राट पहले हो। सूर्यवंशी प्रजा के हित के विषय में सोचना तुम्हारा प्रथम कर्तव्य है।
और उनके हित के लिए कल्पतरु की वापसी आवश्यक थी।... मुझे तुमसे कोई शिकायत नहीं है, अश्वराज!
अति गम्भीर थी कुदुम-चुम्बी। चेहरा भाव शून्य हो उठा था। किसी जबर्दस्त मानसिक द्वन्द्व से गुजर रही थी वो—
तब—
छोड़ीलेखा! तुम कुदुम को लेकर राजस्थल पर पहुंचो। और मुझे अभी पहुंचना है रणभूमि...
...ताऊश्री से भेंट करने।
इधर सेनापति घुड़क एक बार फिर मैदान में था।
आगे बढ़ो साथियों! आज हमारा नेतृत्व करने सूर्यवंशी नगर में आ पहुंचे हैं अश्वसम्राट अश्वराज।

उधर से अश्वबली अपने बचेखुचे पुत्रों की सेना लेकर स्वयं ही रणभूमि की ओर बढ़ रहा था—
आज होगा निर्णायक युद्ध।
अश्वबली को सेना का नेतृत्व करते देख विचलित हो उठा सेनापति घुड़क—
ओह! स्वयं अश्वबली युद्ध लड़ने आया है। मगर अश्वराज को यहां पहुंचने में विलम्ब हो गया तो अनर्थ हो जायेगा।
आक्रमण
अश्वबली अपनी प्रलयंकारी शक्ति के साथ रणभूमि में उतरा था—
आओ रे मेरी प्रलयंकारी शक्तियो! दुश्मनों की धज्जियां उड़ा दो।
सेनापति घुड़क सहित पूरी सेना में खलबली मच गई—
उफ! मुझे इसी बात का भय था। इस प्रलयंकारी शक्ति का सामना कर पाना असम्भव लग रहा है।
अश्वबली के ठहाकों के साथ लाशों के ढेर लगने लगे।
आह
उफ!
इस खलबली का लाभ उठाते हुए अश्वबली के पुत्र भी कत्ले-आम मचाने में सफल हो रहे थे।

और तभी घनगरज सा वो स्वर वहां गूंज उठा-
रुक जाओ ताऊश्री! अपनी शक्ति का चमत्कार दिखाकर मेरे सैनिकों पर तो विजय हासिल कर लेंगे आप। लेकिन ये आपकी पराजय होगी, क्योंकि आपका मुकाबला तो मुझसे है... सूर्यवंशी अश्वसम्राट अश्वराज से।
ओह! इसकी यहां मौजूदगी बता रही है कि मेरा एक और पुत्र अश्वभीम मारा गया।
अश्वबली की भृकुटियों पर बल पड़ते चले गए-
अश्वराज! भतीजे! तुझसे निर्णायक युद्ध मैं तेरी सेना को तेरा नेतृत्व मिलने के बाद करूंगा।
अद्‌भुत उत्साह के साथ चीख पड़ा सेनापति घुड़क-
आक्रमण! दुश्मनों के परखच्चे उड़ा दो। अश्वराज हमारे साथ हैं।
आमने-सामने आ पहुंचे अश्वराज और अश्वबली-
भतीजे! पिछली बार तो तू न जाने कैसे बच गया था। किंतु इस बार मैं तेरे जिस्म के ही टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा ताकि तेरी मृत्यु में मुझे कोई संशय ही ना रहे। हा हा हा।
ताऊश्री! प्रतिशोध की आग में जलते हुए प्राणी को रक्त और जिस्म के टुकड़े देखना ही पसन्द आता है।
...वो भूल जाता है कि वो खुद भी प्रतिशोध की उस आग में झुलस सकता है। खुद उसका भी जिस्म टुकड़े टुकड़े हो सकता है।

किंतु ताऊश्री! आपको तो अब अपने अंग कट जाने पर किसी पीड़ा का अहसास ही नहीं होता। आपके नेत्रों पर स्वार्थ की पट्टी जो चढ़ी हुई है।
क्या व्यर्थ की बकवास किए जा रहा है अश्वराज?
सुलग उठा था अश्वराज-
मैं व्यर्थ की बकवास नहीं कर रहा ताऊश्री! मैं आपको नाल और खुर्रा की मृत्यु का समाचार दे रहा हूं! जिन्होंने क्रूरता व अत्याचार की सारी हदें आपकी बहू को अपमानित करने के लिए तोड़ डाली थीं।
क्या?
नाल व खुर्रा की मृत्यु?
तेरे हाथों?
आग-भभूका सा कहता चला गया वो इच्छाधारी-
हां ताऊश्री, हां! जिस काले इतिहास को मैं सूर्यवंशी का सिंहासन तक आपको सौंप कर बदल डालना चाहता था, आपने अपने पुत्रों के साथ मिलकर उसे और अधिक कलंकित कर डाला...
...ताऊश्री के रूप में मेरे सामने हर समय वो हत्यारा खड़ा है जो अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये अपने ही पुत्रों की लाशों की पगडंडी के ऊपर गुजर कर अपना लक्ष्य भेदने निकला है।

और बस! अश्वरबली का क्रोध चरमसीमा भी पार कर गया—
ज़ुबान को लगाम दे बदज़ुबान! वरना तेरी मृत्यु से पूर्व तेरी ज़ुबान काट कर चील-कौवों को खिला दूंगा।
आह!
अजीब ढंग से मुस्करा उठा अश्वराज।
बस ताऊश्री, बस! युद्धभूमि में मुझ पर प्रथम वार करके आपने मुझसे युद्ध की घोषणा कर दी है। अब ये युद्ध आपके या मेरे अंत के पश्चात ही थम सकेगा। बचाइये, भतीजे का वार।
हा हा हा हा! तेरे ही अंत के बाद थमेगा भतीजे...
...तेरे ही अंत के पश्चात थमेगा ये युद्ध।
ओह! ताऊश्री की इस शक्ति के स्पर्श से मुझे बचना ही होगा।
इधर विलक्षण अश्वमानव के रथ के पांचों विलक्षण-अश्व भी गदर मचाने को युद्धभूमि में आ पहुंचे थे—
हिनऽऽऽ
ईहीं ऽऽऽ
आह
उफ

इधर सहसा ही अश्वराज की ओर बढ़ती शक्ति का स्वरूप परिवर्तित हुआ, और—
ताऊश्री की इन शक्तियों को ही पहले समाप्त करना होगा।
अश्वराज की तलवार न भेद पाई उस विशाल प्राणी को—
इस पर तो मेरी तलवार का वार भी बेअसर हो गया।
क्वांक
उफ
उस खौफनाक प्राणी के पंजे अश्वराज की गर्दन पर आ चिपके—
अश्वराज तुरन्त अपने इच्छाधारी रूप में परिवर्तित हो गया—
इस भयानक प्राणी के अंत के लिए इससे बेहतर रूप मेरे लिए नहीं हो सकता।
अश्वराज की इच्छाधारी शक्ति के वे नुकीले दांत पेवस्त हो गए उस प्राणी के जिस्म में।
अश्वराज अपने सामान्य रूप में वापस लौट आया—
ताऊश्री!

ले फिर ले भतीजे! मैं एक चाल और चल रहा हूं।
अश्वराज इच्छाधारी अश्वशक्ति से परिवर्तित हो गया और भी भयानक रूप व आकार लिए—
टक्कर बराबरी की होनी चाहिए न ताऊश्री!
जैसे दो पर्वत आपस में टकराए।
धमाक
इसी के साथ अश्वरत्नी ने दोहरा प्रहार किया उस पर—
उफ!

अश्वराज के सामान्य रूप में वो चोट उसके लिए घातक साबित हो सकती थी!
ओह! ताऊश्री इन भयानक प्राणियों में उलझा कर मुझ पर घातक वार कर सकते हैं।
अश्वराज लौट आया अपने सामान्य रूप में—
लेकिन इसी के साथ अश्वराज के ठीक सामने प्रकट हो गया एक और विशाल प्राणी—
अब मुझे दोनों पर अपनी निगाहें रखनी होंगी।
अश्वराज परिवर्तित हुआ अपने विलक्षण अश्वरूप में, और—
मेरे अश्वरूप की शक्ति का वार तेरे दो-चार दांत तो तोड़ ही देगा।
तड़ाक
अश्वरत्नी की तलवार के उस भरपूर वार से न केवल अश्वराज ने खुद को ही बचाया बल्कि—
ताऊश्री! कैसी रही?

उधर ध्यान दे अश्वराज उधर। हा हा हा।
पलक झपकते ही सूक्ष्म रूप धारण कर अश्वराज उसकी पकड़ से निकल गया—
फिर उसी तीव्रता के साथ अश्वराज अपना सामान्य रूप प्राप्त कर टकराया अश्वखब्ती से—
मैं तो बच गया ताऊश्री, अब देखता हूं कि भतीजे की चाल से आप भी बचते हैं या नहीं।
अश्वखब्ती के नेत्रों से क्रोध की ज्वाला सी फट पड़ी अगले पल—
इस बार तू नहीं बच पायेगा अश्वराज!
शक्ति टकरा ही जाने वाली थी उससे किंतु—
उफ! फिर वही रक्षाकवच। जिसने एक बार पहले भी मेरी इस शक्ति से रक्षा की थी।

एक बार फिर असफल हुई अश्वखब्ती की शक्ति उस रक्षा कवच को भेदने में—
चकाऽऽक
किंतु अश्वखब्ती की शक्ति के प्रहार से अश्वराज उछले बिना न रह सका।
चौंक पड़ा अश्वखब्ती—
ओह! इस रक्षाकवच ने बचा लिया इसे।
अगले पल चीख पड़ा अश्वखब्ती—
अश्वराज! मुकाबला आमने-सामने हो रहा है तो ये कौन है, जिसे तूने पीठ पीछे से अपना मददगार बनाया हुआ है।
ताऊश्री! इस मदद से मैं भी उतना ही हैरान हूं जितना कि परेशान आप?
तो फिर कौन है वो? सामने आए।
ऐ मेरे अज्ञात मददगार! अब तो तुम्हें सामने आना ही पड़ेगा। क्योंकि हमारे बीच में निर्णायक युद्ध हो रहा है।
अश्वराज लौट आया अपने सामान्य रूप में।

और फिर सामने आने वाला वो शख्स था वही रहस्यमय नकाबपोश--
हां। अब वह वक्त आ गया है जबकि अश्व-मेध अपने चेहरे से नकाब हटायेगा।
कुछ पलों के लिए ठहर सा गया था युद्ध --
अश्वमेध!
हां, अश्वराज! तुम अवश्य जानने के इच्छुक होंगे कि क्यों मैंने कदम-कदम पर तुम्हारी मदद की और अश्वखबी, तुम भी यह बात अवश्य जानना चाहोगे कि मैं कौन हूं?
अवश्य! और उसके पश्चात मैं तुम्हारा भी वध करूंगा।
तो लो। मैं अपने चेहरे से नकाब हटा रहा हूं।
अनजाने ही धड़क उठा था अश्वराज और अश्वखबी का हृदय-
कौन है ये?
और उछल पड़ा अश्वखबी उस सूरत को देखकर --
अ•••आप। पिताश्री आप?
हां, हम अश्वखबी, हम। वो पत्र छोड़कर चले गए थे हम। क्योंकि जानते थे कि तुम एक कलंक बनकर पुन: चमकोगे सूर्यवंशी के मस्तक पर। और उस वक्त तुम एक साधारण अश्वमानव न होगे••••

भर्राया हुआ स्वर था अश्वहस्ति का --
तुम्हारी शक्ति को भेदने के लिए एक अभेद्य शक्ति हमें भी प्राप्त करनी जरूरी थी। और हमने वह शक्ति प्राप्त भी की•••ताकि तुम्हारा अंत किया जा सके। और उसी से तुम्हारा अंत होगा भी अश्वखबी!
और सब कुछ समझ कर अश्वहस्ति के चरणों में झुक गया अश्वराज--
उफ! आप•• मेरे दादाश्री हैं!
हां पुत्र, हां! हम तुम्हारे दादा हैं।
दिल इस कदर भर आया बच्चे का कि तड़प कर सीने में समा गया वो अपने दादाश्री के --
पुत्र अश्वराज!
दादाश्री!
आंसू पलकों के बांध तोड़ कर बहने लगे।
बच्चे से ऐसा कौन सा अपराध हुआ था दादाश्री, जो इतना पास रह-कर भी पोते को सीने से लगाने को न मचले आपके हाथ!
बस करो पुत्र! बस करो। वरना सीने में मचलता ये हृदय फट ही जायेगा।

अपराध तुमसे नहीं पुत्र, अपराध तो हम से हुआ, जो अश्वखबी जैसे कलंक के पिता कहलाए।...
...किंतु सूर्यवंशी के इतिहास पर लगा ये कलंक अब हम धो डालेंगे पुत्र! वो शक्ति हम तुम्हें...
कहर भरे स्वर में चिल्ला उठा अश्वखबी—
बचो पुत्र! आह!
पिताश्री! इससे पूर्व कि आप वो शक्ति अश्वराज को सौंप दें, मैं उसे जीवित नहीं छोड़ूंगा।
इसी के साथ गड़गड़ा उठी बिजलियां।
सिंह समान दहाड़ उठा अश्वराज—
हा हा हा! अब आप वो शक्ति अश्वराज को नहीं दे पायेंगे पिताश्री!
दादाश्री! SSs
श... शक्ति तो ह... हम... उसे... इसे दे भी चुके अश्व... रा... जी।
नहीं! नहीं दादाश्री, नहीं! आप... आप मुझे छोड़ कर नहीं जा सकते। मैं आपको अब कहीं न जाने दूंगा दादाश्री।
शव से लिपट कर दहाड़े मारकर रो उठा अश्वराज—
रुक जाइये दादाश्री! रुक जाइये। आपको अपने बच्चे की सौगन्ध है। मत जाइये। मत जाइये।

और अगले पल! भूकम्प सा नजर आने लगा उसके चेहरे पर! चीख उठा उसका रोम-रोम वह शब्द—
अश्वमेधSSs
और उसकी घन गरज के साथ कौंध उठी विद्युत।
अश्वराज के उस प्रचण्ड रूप ने थरथरा दिया अश्वखबी के कलेजे को—
नहीं! अश्वदेव! तूने मुझे ऐसी शक्ति का वरदान दिया था जिससे कि मैं अपने अधिकार छीन सकता। क्या तेरी शक्ति में वो बल नहीं है?
??
अश्वखबी! तूने अधिकार छीन लेने की शक्ति देने का वर मांगा था। किंतु तुम वह अधिकार न छीन पाये तो इसमें हमारी शक्ति में कहां दोष है।
अश्वराज के हाथ से सरसराया वो शक्ति शस्त्र—
??
जैसे स्तब्ध हो उठा था अश्वखबी—
और उसके सीने के आर-पार होती चली गयी वो तलवार—
आह!

BINAY BURNWAL
MAIN GATE
DURGAPUR-713203
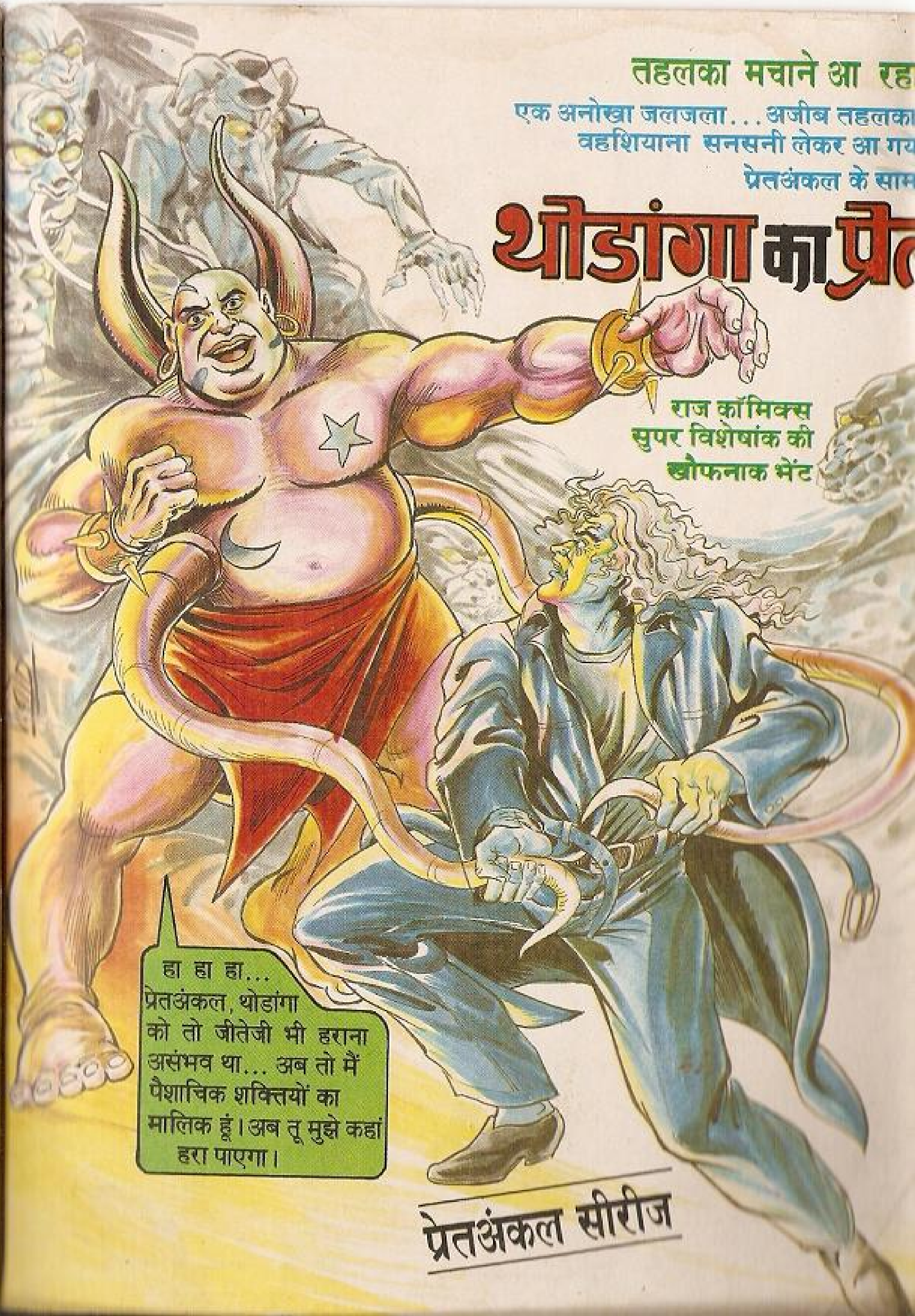
Printed at: Japan Art Press